–त्याग |कहानी | नन्दलाल भारती

मेरा शरीर जिम्मेदारियों को बोझ समझने लगा है। दर्द से झलनी हो रहे इस कमजोर तन के सहारे पारिवारिक जिम्मेदारियों की वैतरिणी कैसे पार कर सकूंगी । कोई दवा भी काट नही कर रही है । थककर गिर ना जाउूं डर लगने लगा है अभिनन्दन के पापा ।

सुशील– गीते तुम ना कभी हार मानी हो न मानोगी । मुझे विश्वास है । तुम कैसे गिर सकती हो तुम्हारे सहारे तो मैं चल रहा हूं । मानता हूं तुम दुखी हो । दर्द की दरिया में डूबकर भी संयुक्त परिवार को ताकत दे रही हो । गीता तुम्हारे त्याग का हमारा खानदान कर्जदार रहेगा । तुम जो कर रही हो वह किसी कठोर तपस्या से कम नही है ।

गीते–देखो ताड़ पर ना चढाओ गिर पडूगी ।

सुशील–सच्चाई है गीते ।

गीते–अभिनन्दन के पापा । तुम्हारे अलावा इस परिवार में मुझे कौन समझा है । मैं मौत के मुंह से निकली हूं तो तुम्हारी वजह से। डा.विनोद ने गलत आपरेशन कर मार ही डाला था ना । मेरे जीवित शरीर का चार–चार बार पोस्टमार्टम हो गया डा.विनोद की वजह से । फटे बोरे की तरह सिले इस शरीर के सहारे कैसे तपस्या पूरी होगी । हमारे बच्चे भी अभी छोटे है उपर से परिवार के दूसरे और उनके बच्चों की जिम्मेदारी । घर–परिवार के लोग बस लेना जानते है । तुम्हारी मजबूरी और हमारे दुख को कभी कोई नही समझा। सबको हमसे अपेक्षा बनी रहती है अपेक्षा पर पूरी तरह मजबूरी में खरा नही उतरने पर नाराजगी की बिजली गरजने लगती है । मै दिन पर दिन शरीर से अक्षम होती जा रही हूं । घुठने शरीर का बोझ उठाने में आना–कानी करने लगे है और आंख भी रोशनी समेटने लगी है । कैसे जीवन पार होगा ?

सुशील–साहस की ताकत तुम्हारे पास तो है । यही असली ताकत है । नारी कभी नही हारी है तुम कैसे हार मान सकती हो ? मुझे तो यकीन ही नही होता। नारी परिवार की आत्मा होती है एक नारी की हार में पूरे परिवार की हार है। गीते सही मायने में तुम हमारी तीनो शक्ति हो –धन की बल की और ज्ञान की भी |कई जन्मो के पुण्य के प्रतिफल स्वरूप तुम हमें अर्धांगिनी के रूप में मिली हो ।

गीते–उल्टा कह रहे हो ।

सुशील–नही सच कह रहा हूं । दर्द में कराहते हुए भी परिवार के लिये इतना बड़ा त्याग कौन कर सकता है। जबकि मतलब के लिये लोग एक दूसरे का हक हड़पने में लगे है तुम अपने बच्चों के साथ निःस्वार्थ भाव से कुल का नाम उज्जवल कर रही हो । यह कर्म तुम्हें दैवीय प्रतिष्ठा प्रदान करता है पर लोग समझे तब ना । यहां तो हमारे बाप ही नही समझ रहे है तो परिवार के और सदस्यों की क्या बात करूं ?

गीते–ससुर जी तो सासू मां को नही समझे तो हमे कहां से समझेगे ? बेचारी सासूमां असमय साथ छोड गयी । थी तो निरक्षर पर पढे–लिखो को सबक सीखाती थी । दुखी नर को नारायण समझकर सेवा करती थी तंगी की हालत में भी । हमे तो चैन से नहाने खाने भर को तो है,हम क्यो पीछे रहे ?

सुशील–भूल गयी ना तू अपने दर्द को । चल पड़ी ना त्याग के रास्ते । तुम त्याग के रास्ते से दर्द के रोड़े को उखाड़ फेकोगी ।

गीते–तुम साथ हो तो कोई रोड़ा टिक भी कैसे सकता है ।

सुशील–गीते अपने त्याग का सेहरा मेरे माथे मत बांधो ।

गीते–तुम्हारे सिवाय हमारा क्या ? स्वार्थ परिवार मे दरार पैदा करता है । यह मै नही चाहती । जब तक आखों में ज्योति और घुठने में तन का बोझ उठाने की ताकत है परिवार के लिये जीउंगी ।
सुशील–गीते दर्द में झटपटाते हुए जीवन यापन करते हुए भी परिवार के लिये यही तुम्हारा त्याग मेरी असली सफलता है। सच नारी के इस भाव को देखकर कवि ने कहा है–जहां नारी की पूज्य वही भगवान विराजित है। सच गीते परिवार के लोग भले ना माने मैं तुम्हारे समर्पण भाव को नमन् करता हूं ।
गीते–नरक का भागीदार मत बनाओ ।
सुशील–कैसे ?
गीते–पति परमेश्वर भला ऐसी बात करेगे तो स्वर्ग का द्वार खुलेगा क्या ?
सुशील–गीते तुम जैसी गृहस्थ तपस्विनी के सामने भगवान तक को हाजिर होना पड़ा है,इतिहास गवाह है ।
गीते–अभिनन्दन के पापा तुम्हारे साथ की छांव में दर्द का एहसास कैसे हो सकता है ।
सुशील–इतना बड़ा मान ना दो मुझे । हर दुख–सुख में हम बराबर के भगीदार है । हां मुझे भी दर्द हुआ है जब अपने मुसीबत के दौर में आंखे तरेरे है । इस दर्द से कभी नही उबर पाउंगा । मैं शहर की गलियों में पागलों जैसा रोजगार की तलाश में भटक रहा था । तुम्हे मेरे बाप के कड़वे शब्द सुनने को मिल रहे थे । अरे तुम मेरी बेरोजगारी के लिये जिम्मेदार तो ना थी । सही मायने में मेरे बाप ही मेरी मुश्किलों के कारण रहे ।कम उम्र में ब्याह नही करते तो परिवार का बोझ तो नही बढता ना । जब मै अपने पैर पर खड़ा हो जाता तो ब्याह करते तो । मुझे भी आसानी होती पर नही उन्हे तो अपनी नाक उची करनी थी । इस नाक की उचाई में भले ही बेटे का जीवन बर्बाद हो जाये परवाह नही ।
गीते–बाबूजी को कोसने से क्या फायदा । मां–बाप बच्चों के भले के लिये करते है । पुरानी सोच में बंधकर किया जाने वाला काम फायदेमंद नही साबित होता । इस बात पर मैं भी सहमत हूं ।
सुशील–बात सहमति असहमति की नही है । बात है समय के साथ चलने की । आज भी अपनी जिद पर अड़े रहते है । पिताजी की वजह से मां को कितनी मुश्किले झेलनी पड़ी । बेचारी असमय चल बसी । पितजी है कि नाक की सीध में चलने के अलावा और कुछ नही सीखे । नशा से तो ऐसा नाता है जैसे भूखे का रोटी से । रोटी की चिन्ता नही है । घर परिवार की चिन्ता नही है । वे अपनी जिद को पूरा करने के लिये हर नुस्खा अजमा लेते है ।
गीते–बाबूजी की अच्छाई को देखो । संयुक्त परिवार की विरासत को जिस तरह से बचाये रखा है । पूरे गांव में वैसा किसी ने नही किया है ।
सुशील–फायदा क्या हुआ ? हम भाई–बहनो हक उन लोगो पर कुर्बान हो गया जो लोग आज दुश्मन बन बैठे हैं।
गीते–सभी अपने नसीब का खाते है । मान भी ले तुम–भाई बहने का हक तुम्हारे चाचा–ताउ के बच्चों में बंट भी गया तो क्या हुआ अपने ही तो वे भी है । तुम्हारे पिताजी उनके भी तो अपने है । तुम को जो चाचा–ताउ चाची–ताई,नाना–नानी,मामा–मामी,फुआ–फूफा और कुटुम्ब संबधियो का जो प्यार मिला वह प्यार आज की पीढी को लिए रहा है । एकल परिवार में भले ही भर पेट रोटी मिले शान –शौख्त रहे पर संयुक्त परिवार वाला सुख कभी नही मिल सकता । मुझे खुशी है कि तुम भी संयुक्त परिवार की राह में मील का पत्थर साबित हो रहे हो । तुम्हारा त्याग व्यर्थ नही जायेगा । तुम्हारे त्याग को तुम्हारे

भतीजे–भतीजियां समझेगे । मुझे तुम पर नाज है कि तुम अपने पिताजी की नशापान वाली बुराई का त्याग कर दिये हो पर एक अच्छाई को अपनाये हो । यह तुम्हारा बहुत बड़ा त्याग है लाख कष्ट उठाकर।
सुशील–अब कौन सा तीर चला रही हो भागवान ।बात तुम्हारे त्याग से शुरू हुई थी तुम श्रेय का सेहरा मेरे सिर बांध रही हो । परिवार तो गृहलक्ष्मियां अमरता प्रदान करती है ।
गीते –बात नही बना रही हूं सही कह रही हूं । संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिये तुम त्याग कर रहे।
सुशील–क्या तुम्हारे बिना सहयोग के कुछ सम्भव है । आज की दुल्हन आते अपना चूल्हा रोप लेती है । तुम बेटी दमाद वाली होकर भी सास–ससुर के कपड़े धो लेती हूं । देवर–देवरानी का भाई–बहन की तरह ध्यान रखती हो । भतीजे–भतीजियों को अपना बेटा–बेटी समझती हो ।क्या यह त्याग कम है संयुक्त परिवार को जीवित रखने के लिये ।
गीते–तुम्हारी तरह और भी लोग सोचने लगे तो संयुक्त परिवार कभी टूटे नही ।देखो न मंदी का दौर दुनिया को हिलाकर रख दिया । अपने देश पर कोई आंच नही आयी क्या नही ना। इसकी जड़ में संयुक्त परिवार का हाथ है जिसकी वजह से छोटी–छोटी बचत के महत्व को समझा गया।
सुशील–ठीक कह रही हो संयुक्त परिवार में दुख कम सुख अधिक है लेकिन आज के दौर में तो ग्रहण लगने लगा है । शहर की बात छोड़ों गांव में भी संयुकत परिवार बिखरने लगा है । ना जाने कौन सी ऐसी बयार चल पड़ी है कि बस खुद के परिवार को छोड़कर सारे बेगाने होते जा रहे है । यहां तक की मां बाप भी जबकि संयुक्त परिवार सुख का सागर है और दुख के लिये लुकमान ।
गीते–आज के लोग ज्यादा स्वार्थी हो गये है ।पहले अपना पेट भरने की ललक है,दूसरे भले ही भूख से मर जाये इसकी चिन्ता नही । मेरी मां ताउजी के तीनो बच्चों को हम चारो भाई बहनो की तरह ही पाला,जबकि हमारे पिताजी तो सरकारी मुलाजिम थे । मेरी मां के मन में कभी कोई विकार नही पनपा ना किसी प्रकार का भेद । ताई आराम की बंशी बजाती रहती थी । मेरे मां बाप के मरते ही सब कुछ बिखर गया । पुराने लोगों में परिवार को साथ लेकर चलने की कला आती थी । आज बस दिखावा है । अरे जरूरत पड़े तो खून भी पी ले ।देखो ताउजी के बेटे अपना कमा खा रहे है । बेचारे ताउ दो चूल्हों के बीच रोटी के लिये टुकुर–टुकुर ताकते रहते है।
सुशील–ये सब पाश्चात्य संस्कृति की नकल है । यही नकल हमारे देश की संस्कृति को वनवास दे रही है । हमारे देश के लोग अपनी विरास बचाने में गौरव नही महसूस कर रहे है पश्चिमी खान–पान रहन–सहन को स्टेटस सिम्बस से जोड़कर देख रहे है । जबकि अपने देश के लोग भी जानते है पश्चिमी सभ्यता में माम–डैड,ब्रदर–सिस्टर और आंटी–अंकल के अलावा कोई रिश्ता नही होता । हमारे यहां मां–बाप,भाई–बहन,फुआ–फूफा,चाचा–चाची,दादा–दादी मौसा–मौसी,मामा–मामी और बहुत सारे पवित्र रिश्ते है पर ये रिश्ते नही पश्चिमी रिश्ते मा–डैड ज्यादा अच्छे और आधुनिक लगने लगे है ।
गीते–ठीक कह रहे ऐसी सोच अपनी संस्कृति सभ्यता और मानवतावादी परम्परा के साथ न्याय कहां कर सकती है ।
सुशील–पश्चिमी संस्कृति की नकल महामारी है ।
गीते–इस महामारी से बचने के लिये नई पौध को संयुक्त परिवार की विशेषतओं से परिचय करना होगा । उन्हे दादा–दादी,नाना–नानी के सानिध्य में दीक्षित करना होगा तभी देश की आन संयुक्त परिवार बच सकती है ।

सुशील–सभी तो शहर की तरफ भाग रहे है ।
गीते–परदेस तो लोग पहले भी जाते थे । बात ये नही है बात ये है कि आज की जरूरत के अनुसार स्कूल कालेज गांव स्तर पर होगे तो नौकरीपेशा मां –बाप बच्चों को दादा–दादी,नाना–नानी की देखरेख में पढा लिखा तो सकते है ।दुर्भाग्यबस आज के इस युग में भी गांव की पहुंच से बहुत दूर सुविधाये है । बच्चों के भविष्य की चिन्ता में मां–बाप शहर की ओर भाग रहे है और संयुक्त परिवार टूट रहा है । ऐसा नही कि इसे बचाया नही जा सकता है बचाया जा सकता है ।
सुशील–वो कैसे ?
गीते– तनिक अपनी जरूरतों को समिति करना होगा । सगे–सम्बन्धियों के बारे में सोचना होगा,अपनी जन्मभूमि के प्रति कर्तव्य के बारे में सोचना होगा । यही पाठ अपने बच्चों को अपने स्तर पर पढाना होगा और यह सब बिना त्याग के नही हो सकता । अरे हम भी तो आज के जमाने के लोग है ना । संयुक्त परिवार को सींच रहे है कि नही । साल भर में दो बार गांव जाते है । पूरे कुटुम्ब की फिक्र करते है । अपनी कमाई से जो हो सकता है सभी के लिये साबुन तेल से लेकर कपड़ा लता तक करते हो । समय–समय पर मनिआर्डर भी करते हो क्योकि गांव में जो लोग है उनसे गहरा नाता है ।
सुशील–बात तो सही है पर सभी परदेसी ऐसा सोचे तब ना । देखने में तो यहां तक आ रहा है कि शहर की हवा लगते ही गांव की जमीन जायदाद बेचकर शहर बस जा रहे है । जबकि शहर में पड़ोसी भी नही पहचानता । मरने पर किराये के लोग ढूढे जाते है । कंधा देने वाला कोई नही मिलता । दुख तकलीफ मे कौन किसको पूछता है । गांव में तो दुख–तकलीफ में तो लोग टूट पड़ते है । अपनापन सिर चढकर बोलता । यह संयुक्त परिवार की देन है । अभी भी संयुक्त परिवार का असर देश की धड़कन में बसा है । जरूरत है थोड़ा से स्वहितों में कटौती कर परिवारजनों पर न्यौछावर करने की।
गीते–जैसा मेरे मां–बाप और सास–ससुर ने त्याग किया । काश ऐसा सभी करने लगे तो मरणासन्न अवस्था में पड़ी संयुक्त परिवार की परम्परा को संजीवनी मिल जाती । मैं तकलीफ उठाकर भी संयुक्त परिवार को सीचती रहूंगी भले ही परिवारजनों ने मेरे साथ बदसलूकी किया हो । मै सारी गलतियों को भुलाकर अच्छाईयों को याद रखूंगी क्योंकि संयुक्त परिवार में मान है सम्मान है,सुदृढ पहचान है, कई जोड़ी लाठियों की ताकत, पारिवारिक सुख–सृवृध्दि का आनन्द , आत्मिक सकून भी तो है संयुक्त परिवार में।हम इसे टूटने नही देगे । हमारे देश,स्वस्थ पारिवारिक रिश्तों की आन मान पहचान है संयुक्त परिवार अभिनन्दन के पापा ।
सुशील–त्याग से ही संयुक्त परिवार का हमारा सपना संवर सकता है । हम तुम्हारे साथ है गीते ।